❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

न त्वावँ यथा त्वम्। सामवेद 203

हे प्रभो तुझ जैसा काई नहीं है। आप अनुपम हैं।

O God ! Verily there is none like you. You are matchless.

वर्ष 39, अंक 24 एक प्रति : 10 रुपये

सोमवार 18 अप्रैल, 2016 से रविवार 24 अप्रैल, 2016

विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117

दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 10

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में

142वां आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह विश्व कल्याण यज्ञ के साथ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द राष्ट्रवाद, स्वराज्य व स्वदेशी के आदर्श विचारक थे – डॉ. महेश विद्यालंकार

5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर 1000 यज्ञों का वृहत आयोजन करने का संकल्प

पर्यावरण शुद्धि हेतु आर्यसमाज की एक पहल
मृत देह पर शॉल आदि ओढ़ाने के स्थान पर घी, हवन सामग्री तथा सुगन्धित पदार्थ लेकर जाने का दिलाया संकल्प

वैदिक धर्म के प्रचार की जिम्मेदारी स्वयं प्रत्येक आर्य को निभानी होगी – महाशय धर्मपाल

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 8 अप्रैल 2016 को दिल्ली के फिक्की सभागार में आर्य समाज का 142 वां स्थापना दिवस विश्व कल्याण यज्ञ के साथ बड़े धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त सार्वदेशिक आर्य वीर दल के स्वामी देवव्रत सरस्वती, आचार्य सनत कुमार, श्री रजनीश गोयनका (समाज सेवी), दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के उपप्रधान श्री अजय सहगल ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ किया।

वैदिक परम्परा सबसे श्रेयस्कर – देश-विदेश में यज्ञ पर अनुसंधान करने की आवश्यकता – आचार्य सनत् कुमार

समारोह में पधारे मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि ने अपने उद्बोधन में कहा "आर्य समाज ने दुनिया को वेदों का यथार्थ सन्देश दिया तथा महर्षि दयानन्द ने संसार के श्रेष्ठ लोगों को संगठित करने की प्रेरणा दी। उन्होंने वैदिक विचारधारा के प्रसार के लिए 75 देशों की यात्रा की और 400 से अधिक पुस्तकों की रचना की।" समाज सेवी रजनीश गोयनका ने अपने उद्बोधन में कहा, "जब-जब हिन्दू समाज में कुरीतियां आई, आर्य समाज ने सजग प्रहरी की भांति अहम् भूमिका निभाई।"

मुख्य वक्ता डॉ. महेश विद्यालंकार ने कहा, "महर्षि दयानन्द राष्ट्रवाद, स्वराज्य व स्वदेशी के आदर्श विचारक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्र को भूमि का टुकड़ा न मानकर इस धरती को मां मानना स्वीकार किया था। इसके विपरीत आज वर्तमान परिस्थितियों में भारत माता की जय बोलने में आपत्ति करने वाला केवल राष्ट्रद्रोही ही हो सकता है। देश का मान बढ़ाते हुए स्वामी जी ने उद्घोष किया था 'कोई कितना भी करे, स्वदेशी राज्य सर्वोपरि और उत्तम होता है।" आचार्य सनतकुमार ने कहा, "आज ही के दिन सृष्टि का शुभारम्भ हुआ था। चैत्रशुक्ल प्रतिपदा विक्रमी सम्वत् को सम्पूर्ण भारतवर्ष में नववर्ष स्वरूप मनाया जाता है। यह पर्व समस्त भारतवासियों में सिन्धी, चेट्टी चांद, उगाडि, गुड़ीपड़वा, नवरह, बैशाखी इत्यादि पर्वों को ऋतु परिवर्तन की उमंग व उत्साह के साथ मनाया जाता रहा है। इसी दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने 142 वर्ष पूर्व समाजोत्थान के लिए, समाज में फैली कुरीतियों एवं पाखंडों का खण्डन करने के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी।" स्वामी देवव्रत सरस्वती जी ने भी समस्त आर्यों को नव वर्ष की शुभकामनायें देते हुए युवाओं को

चैत्र प्रतिपदा ही विज्ञान सम्मत नव वर्ष है – स्वामी डॉ. देवव्रत सरस्वती

संस्कारित करने पर बल दिया। सभा प्रधान श्री महाशय धर्मपाल ने भारतीय नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2073 पर विशाल आर्य जन समूह का अभिनन्दन करते हुए उन्हें ईमानदारी, मेहनत, मीठे व्यवहार से जीवन में उन्नति करने का आह्वान किया। महाशय जी ने आगे कहा," माता-पिता, अपने पूर्वजों व विद्वानों का सदा सम्मान करना

– शेष पृष्ठ 5 पर

सेना को तो मत घसीटो!

कई बार न्यूज चैनल देखते हैं तो लगता है जैसे मीडिया के मन में एक संदेह घर कर गया है कि वो ही इस देश का संचालन चंद मीडिया घरानों के पास रह गया है। जिस पर चाहें आप कलंक लगा दें जिसको चाहें आप हीरो बना दें यह कैसे सम्भव हो सकता है? अब आप सीमा के

कश्मीर घाटी के हंदवाड़ा में हुई एक घटना में सड़कों पर विरोध प्रदर्शन कर रहे लोगों पर भारतीय सेना के जवानों ने गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। इस गोलीबारी के बाद मची भगदड़ में जहाँ कई लोग घायल हो गए वहीं सेना की गोलियों का शिकार हुए २ नौजवानों की मौके पर ही मौत हो गई। लोगों के विरोध प्रदर्शन की वजह आर्मी के एक जवान की घिनौनी करतूत थी जिसमें उसने एक कॉलेज की स्टूडेंट के साथ छेड़छाड़ की थी।

कर रही है। किसी को दागदार तो किसी को साफ-सुथरा कहने का अधिकार सिर्फ सजग प्रहरी भारतीय सेना के पीछे क्यों

– शेष पृष्ठ 3 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित होने वाली कक्षाएं

वेद मन्त्र पाठ कक्षा

दिनांक : 7 मई 2016 से प्रति शनिवार सायं 4:30 से 6 बजे
स्थान : आर्य समाज जनकपुरी सी-3, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
अध्यापन : आचार्य प्रणवदेव शास्त्री
सम्पर्क : शिव कुमार मदान 9310474979), श्री अजय तनेजा (9811129892)

व्यावहारिक संस्कृत शिक्षण कक्षा

दिनांक : 8 मई 2016 से प्रति रविवार सायं 5 से 7 बजे
स्थान : गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम, आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लॉक हरी नगर, नई दिल्ली-110064
सम्पर्क: महेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज (9650183184)

कुल 12 कक्षाओं के उपरान्त सभी प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

वेद-स्वाध्याय

सबको नचाने वाला इन्द्र

इन्द्र इन्नो महाना दाता वाजानां नृतुः। महाँ अभिवा यमत्।। ऋ. 8/92/3
ऋषिः श्रुतकक्षः।। **देवताः** इन्द्रः।। **छन्दः** पपदनिचृद्गायत्री।।

विनय - इस संसार के जो तेजस्वी महापुरुष हज़ारों-लाखों लोगों के नेता होकर बड़े-बड़े काम कर रहे हैं, उनमें उस तेज और महाबल को उत्पन्न करने वाले इन्द्र परमेश्वर ही हैं। इस संसार में जो नाना आन्दोलन उठते और दबते रहते हैं, कभी कोई लहर चलती है, कभी कोई तथा इन आन्दोलनों और लहरों में उस समय के सब मनुष्य बलात् खिंचे चले जाते हैं, यह सब खेल खिलाने वाले और हमें नाच नचाने वाले भी इन्द्र ही हैं। ये इन्द्र हम सबको अपना थोड़ा या बहुत तेज और बल दे रहे हैं और उस द्वारा नाच नचा रहे हैं। आज जो हममें महातेजस्वी है, वह कभी कुछ दिनों में सर्वथा निस्तेज हो जाता है। यह सब उसका खेल है। आओ, हम अपने तेज व बल का सब अभिमान त्यागकर, नम्र होकर, उस महान् इन्द्र की शरण में पड़ जाएं। तनिक देखो, वह इन्द्र कितना महान् है जो अकेला हम अनन्त जीवों को कठपुतली की तरह नचा रहा है-स्थावर, जंगम सभी असंख्य प्रकार की सृष्टि को हिला रहा है! वह महान् इन्द्र इस ब्रह्माण्डो को नचा रहा है तो इसका यह मतलब नहीं है कि उसकी इस सृष्टि में कुछ व्यवस्था नहीं है, मनमानी या अन्धाधुन्धी है तथा एक तुच्छ पुरुष कुछ ही दिनों में यंगस्विता के शिखर पर पहुंचा देखा जाता है। वह हमें नाच भी पूरी व्यवस्था के साथ, अटल सत्यनियमों के साथ नचा रहा है। इसका कारण यह है कि वह 'अभिज्ञु' है, सबके अभिप्रायों को एकदम जानता है, सर्वान्तर्यामी है, इस सब ब्रह्माण्ड की वह आत्मा है। हम सब अनन्त प्राणियों के हृदयों में आत्मा की आत्मा होकर, अन्तर्यामी होकर, वह अकेला ही बैठा हुआ अनन्त-जीवरूप अनन्त चक्रों वाले इस महायन्त्र को चला रहा है। अहो, वह इन्द्र परमेश्वर कितना महान् है! कितना महान् है!!

शब्दार्थ- इन्द्र इत्=इन्द्र ही नः=हमें महानां वाजानां दाता= तेजों और बलों का देने वाला तथा नृतुः= नचानेवाला वह महान्= महान् है और अभिज्ञु=अभिप्राय को जानने वाला, अन्तर्यामी होता हुआ आयमत्= इस जगत् को व्यवस्था में बाँधे हुए है।

- आचार्य अभयदेव

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

क्या मानवाधिकार आयोग मर गया?

हमारे देश में जरा-जरा सी बातों पर लोकतंत्र की हत्या हो जाती है, मानवाधिकार आयोग सकते में आ जाता है। रोहित वेमुला, अखलाक आदि की मृत्यु को लोकतंत्र की हत्या बताई गयी थी। कई साल पहले मुठभेड में मारी गयी इशरत जहाँ के लिए मानवाधिकार आयोग अभी तक आंसू बहा रहा है जो लोग मानवाधिकार का नाम लेकर एक आतंकी की फांसी के लिए पूरी रात सुप्रीम कोर्ट के दरवाजे पर पड़े रहे थे क्या वे जानते हैं सच में मानवाधिकारों का हनन कैसे होता है वे सुने - दो साल पहले बोको हराम द्वारा अगवा की गई लड़कियों का एक वीडियो सामने आया है। दो साल पहले आतंकवादी संगठन बोको हराम ने 276 लड़कियों को चिबोक शहर से अगवा कर लिया था। इन लड़कियों के अगवा किए जाने के बाद सोशल मीडिया पर ब्रिंग बैक अवर गर्ल्स नाम से एक प्रचार अभियान चल रहा था जिसमें अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की पत्नी मिशेल ओबामा और कई हस्तियां जुड़ीं थीं बोको हराम के नेता अबु बकर शेकाउ ने कहा है कि लड़कियों ने इस्लाम कबूल कर लिया है और उन्हें बोको हराम के लड़कों से शादी की धमकी दी जाती है या फिर उन्हें गुलाम के तौर पर बेचा जाता है अगवा की गई लड़कियों में से 57 लड़कियां भागने में कामयाब रही हैं, 219 अभी भी बोको हराम के कब्जे में हैं।

समूचे विश्व में मानवधिकारों के पैरोकार अपनी आवाज मुखर करते दिखाई पड़ते हैं। मानवाधिकारों की रक्षा को तत्पर यह लोग अक्सर दोगुली नीति करते दिखाई देते हैं यह दोगलापन ही तो है कि कश्मीर और याकूब मेमन पर मानवाधिकार का हनन बताने वाले स्वामी अग्निवेश जैसे महानुभाव आखिर इन अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर बोलने से कतराते क्यों हैं? इसलिए कि नाइजीरिया इनसे दूर है, चलो नाइजीरिया और सीरिया में यजीदी समुदाय की बेटियों पर हुए जुल्म इनकी पहुँच से दूर हैं लेकिन पाकिस्तान में जुल्मों का शिकार हुई रिंकल का मामला तो अमेरिका की संसद तक गूंजा था क्या तब इन्हें रिंकल की चीख सुनाई नहीं दी थी? या तब इनका मानवाधिकार बहरा हो गया था?

पाकिस्तान में फरवरी 2012 में मुसलमान बनने के लिए मजबूर की गयी 19 वर्षीय हिन्दू लड़की रिंकल कुमारी ने वहाँ की एक अदालत में कहा था पाकिस्तान में सब लोग एक दूसरे से मिले हैं यहाँ इंसाफ सिर्फ मुसलमानों को मिलता है हिन्दू और सिखों के लिए कोई इंसाफ नहीं है। मुझे यहीं कोर्ट रूम में मार डालो लेकिन दारुल अमन मत भेजो। रिंकल के इस बयान से सहज अंदाजा लगाया जा सकता है। रिंकल अब फरियाल के नाम से जानी जाती है वह इन दिनों जबरदस्ती के अपने शौहर नवीद शाह के साथ रहने को मजबूर है। रिंकल का मामला अमेरिका तक पहुंचा था। अमेरिकी सांसद ब्रेड शरमन ने पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति जरदारी को पत्र लिखकर कहा था कि सिंध में हिन्दुओं का दमन रोकें। लेकिन तब भारत से रिंकल के लिए एक आवाज न तो सरकार की ओर से उठी थी और ना ही मानवाधिकारों के इन रक्षकों के मुंह से रिंकल को न्याय देने की बात कही गयी थी! इशरत जहाँ को अपनी बेटी तक बताने वाले तथा कथित धर्मनिरपेक्ष नेता तब खामोश पाए गये थे। क्या रिंकल किसी की बेटी नहीं है? यदि है तो फिर यह दोगुलापन क्यों? क्या तब इनका मानवाधिकार मर गया था?

हमें तब भी उम्मीद थी और आज भी है कि इस्लाम के वे अनुयायी जो इस्लाम को अध्यात्म शांति और सहिष्णुता का मजहब बताते हैं उठ खड़े होंगे। लेकिन निंदा का स्वर तक कहीं सुनाई नहीं दिया था। क्या ये इस निंदा की श्रेणी में नहीं आता? इस वारे में फतवा क्या कहता है? इस कार्य की सजा अल्लाह हाखिर क्या देगा यह तय नहीं है? किन्तु जब किसी पर ईशनिंदा का आरोप लगता है तो लाखों मुसलमान विरोध प्रदर्शन व हिंसा करने को सड़कों पर उतर आते हैं। लेकिन इस्लामवादी आतंकियों बोको हरम से लेकर इस्लामिक स्टेट द्वारा बरपाई जा रही ज्यादतियों के खिलाफ शायद ही कोई मुसलमान सामने आता हो? विगत कुछ सालों से धर्मनिरपेक्ष दलों के नेताओं के बयान और आतंकवादियों के प्रति उठती उनकी संवेदना से भारत का उदारवादी मुस्लिम असमंजस की स्थिति में आ गया है कि कहीं जिहाद की बातें और क्रूरकृत्य शायद अधिाक इस्लाम प्रमाणित हो, चाहे उनका व्यवहार कुरूप क्रूर ही क्यों ना हो! आज अमेरिका से लेकर जो खुद को आतंक का सबसे बड़ा रक्षक कहता है भारत तक आतंक के मुद्दे पर दोगुली राजनीति हो रही है। कारण अमेरिका का हित अपना हथियार कारोबार और भारत के नेताओं का वोट हित, जिसके कारण सच को दबाया जा रहा है। वरना अखलाक की मौत का मुद्दा यूएनओ में उठाने वाले नेता, एक कुर्दिस बच्चे ऐलन कुर्दी की मौत पर कई दिन रोने वाली भारतीय मीडिया इन बेगुनाह बेटियों के मुद्दे पर बोलने से हिचकते क्यों हैं? या हो सकता है इन्हें खबर मिली ही ना हो, शायद उन्हें यह खबर तब ही मिलती जब उनमें से एक बेटी इनकी भी होती?

- सम्पादक

बोध कथा

इन्द्रियों को वश में रखने की विधि

स्वामी रामतीर्थ जब प्रोफेसर तीर्थराम थे तब लाहौर के एक कॉलेज में पढ़ाते थे। वह रहते थे लुहारी दरवाज़ा में। कॉलेज से घर को आ रहे थे तो लुहारी दरवाजे में उन्होंने एक व्यक्ति को टोकरी में रखकर नींबू बेचते हुए देखा। पीले रंग के रस भरे नींबू थे। मुख में पानी आ गया। जिह्वा ने कहा-''क्रय कर लो, उनका स्वाद बहुत उत्तम है।''

तीर्थराम थोड़ी देर रुके। फिर आगे बढ़ गये। आगे जाकर जिह्वा फिर मचली; उसने कहा-''नींबू अच्छे तो थे, नीबू खाने में हानि क्या है?'' तीर्थराम उल्टे आये। नींबुओं को देखा। वास्तव में बहुत उत्तम थे। उन्हें देखकर फिर घर की ओर चल पड़े। थोड़ी दूर गये तो जिह्वा फिर चिल्ला उठी-''नींबू का रस तो बहुत अच्छा है। नींबू तो खाने की चीज़ है। उसे खाने में पाप क्या है?''

तीर्थराम पुनः नींबू वाले के पास आ गये। दो नीबू मोल ले लिये। घर पहुंचे। देवी से कहा-''चाकू लाओ।'' उसने चाकू लाकर रख दिया। तीर्थराम चाकू को नीबू के पास और दोनों को अपने समक्ष रखकर बैठ गये। बैठे रहे, देखते रहे। अन्दर से आवाज़ आई-''इन्हें काटो, काटने में क्या हानि है?'' रामतीर्थ ने चाकू उठाया और एक नीबू को काट दिया। मुख में पानी भर आया। अन्दर से फिर प्रेरणा हुई- ''इसे चखकर तो देखो, इसका रस बहुत उत्तम है।''

रामतीर्थ ने एक टुकड़े को उठा लिया, जिह्वा के समीप ले गये। नींबू को उसके साथ लगने नहीं दिया। अन्दर से किसी ने पुकारकर कहा-''तू क्या इस जिह्वा का दास है? जो यह जिह्वा कहेगी, वही करेगा? जिह्वा तेरी है, तू जिह्वा का नहीं।''

समीप खड़ी पत्नी ने कहा-''यह क्या करते हो? नींबू को लाये, इसे काटा, अब खाते क्यों नहीं?'' जिह्वा ने कहा-''शीघ्रता करो। नीबू का स्वाद बहुत उत्तम है।''

रामतीर्थ शीघ्रता से उठे। कटे और बिना कटे हुए दोनों नीबुओं को उठाकर गली में फेंक दिया और प्रसन्नता से नाच बैठे-''मैं जीत गया!'' यह है इन्द्रियों को वश में करने की विधि।

- साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

बैसाखी के अवसर पर हिन्दू समाज के लिए सन्देश

– डॉ. विवेक आर्य

मैदान में इतने लोगों के होने के बाद भी वहां सन्नाटा छा गया, सभी एक-दूसरे का मुंह देख रहे थे। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। तभी तम्बू से गुरु गोबिन्द सिंह केसरिया बाना पहने पांचों नौजवानों के साथ बाहर आए। पांचों नौजवान वही थे जिनके सिर काटने के लिए गुरु गोबिन्द सिंह तम्बू में ले गए थे। गुरुदेव और पांचों नौजवान मंच पर आए, गुरुदेव तख्त पर बैठ गए। पांचों नौजवानों ने कहा गुरुदेव हमारे सिर काटने के लिए हमें तम्बू में नहीं ले गए थे बल्कि वह हमारी परीक्षा थी। तब गुरुदेव ने वहां उपस्थित सिक्खों से कहा आज से ये पांचों मेरे पंज प्यारे हैं। गुरु गोविन्द सिंह के महान संकल्प से खालसा की स्थापना हुई। हिन्दू समाज अत्याचार का सामना करने हेतु संगठित हुआ। इतिहास की इस घटना का मनोवैज्ञानिक पक्ष अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

मुगल शासनकाल के दौरान बादशाह औरंगजेब का आतंक बढ़ता ही जा रहा था। चारों ओर औरंगजेब की दमनकारी नीति के कारण हिन्दू जनता त्रस्त थी। सदियों से हिन्दू समाज मुस्लिम आक्रांताओं के झुंडों का सामना करते हुए अपना आत्म विश्वास खो बैठा था। मगर अत्याचारी थमने का नाम भी नहीं ले रहे थे। जनता पर हो रहे अत्याचार को रोकने के लिए सिख पंथ के गुरु गोबिन्द सिंह ने बैसाखी पर्व पर आज ही के दिन आनन्दपुर साहिब के विशाल मैदान में अपनी संगत को आमंत्रित किया। जहां गुरुजी के लिए एक तख्त बिछाया गया और तख्त के पीछे एक तम्बू लगाया गया। गुरु गोबिन्द सिंह के दायें हाथ में नंगी तलवार चमक रही थी। गोबिन्द सिंह नंगी तलवार लिए मंच पर पहुंचे और उन्होंने ऐलान किया- मुझे एक आदमी का सिर चाहिए। क्या आप में से कोई अपना सिर दे सकता है? यह सुनते ही वहां मौजूद सभी शिष्य आश्चर्यचकित रह गए और सन्नाटा छा गया। उसी समय दयाराम नामक एक खत्री आगे आया जो लाहौर निवासी था और बोला- आप मेरा सिर ले सकते हैं। गुरुदेव उसे पास ही बनाए गए तम्बू में ले गए। कुछ देर बाद तम्बू से खून की धारा निकलती दिखाई दी। तंबू से निकलते खून को देखकर पंडाल में सन्नाटा छा गया। गुरु गोबिन्द सिंह तंबू से बाहर आए, नंगी तलवार से ताजा खून टपक रहा था। उन्होंने फिर ऐलान किया- मुझे एक और सिर चाहिए। मेरी तलवार अभी भी प्यासी है। इस बार धर्मदास नामक जाट आगे आये जो सहारनपुर के जटवाड़ा गांव के निवासी थे। गुरुदेव उन्हें भी तम्बू में ले गए और पहले की तरह इस बार भी थोड़ी देर में खून की धारा बाहर निकलने लगी। बाहर आकर गोबिन्द सिंह ने अपनी तलवार की प्यास बुझाने के लिए एक और व्यक्ति के सिर की मांग की। इस बार जगन्नाथपुरी के हिम्मत राय झींवर (पानी भरने वाले) खड़े हुए। गुरुजी उन्हें भी तम्बू में ले गए और फिर से तम्बू से खून की धारा बाहर आने लगी। गुरुदेव पुनः बाहर आए और एक और सिर की मांग की तब द्वारका के युवक मोहकम चन्द दर्जी आगे आए। इसी तरह पांचवीं बार फिर गुरुदेव द्वारा सिर मांगने पर बीदर निवासी साहिब चन्द नाई सिर देने के लिए आगे आये। मैदान में इतने लोगों के होने के बाद भी वहां सन्नाटा पसर गया, सभी एक-दूसरे का मुंह देख रहे थे। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था, तभी तम्बू से गुरु गोबिन्द सिंह केसरिया बाना पहने पांचों नौजवानों के साथ बाहर आए। पांचों नौजवान वही थे जिनके सिर काटने के लिए गुरु गोबिन्द सिंह तम्बू में ले गए थे। गुरुदेव और पांचों नौजवान मंच पर आए, गुरुदेव तख्त पर बैठ गए। पांचों नौजवानों ने कहां गुरुदेव हमारे सिर काटने के लिए हमें तम्बू में नहीं ले गए थे बल्कि वह हमारी परीक्षा थी। तब गुरुदेव ने वहां उपस्थित सिक्खों से कहा आज से ये पांचों मेरे पंज प्यारे हैं। गुरु गोविन्द सिंह के महान संकल्प से खालसा की स्थापना हुई। हिन्दू समाज अत्याचार का सामना करने हेतु संगठित हुआ। इतिहास की इस घटना का मनोवैज्ञानिक पक्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

पंज प्यारों में सभी जातियों के प्रतिनिधि शामिल हुए थे। इसका अर्थ यही था कि अत्याचार का सामना करने के लिए हिन्दू समाज को जात-पात मिटाकर संगठित होना होगा तभी अपने से बलवान शत्रु का सामना किया जा सकेगा। खेद है कि हिन्दुओं ने गुरु गोविन्द सिंह के सन्देश पर अमल नहीं किया। जात-पात के नाम पर बटे हुए हिन्दू समाज

– शेष पृष्ठ 7 पर

सेना को तो मत घसीटो!

प्रथम पृष्ठ का शेष

पड़ गये? कन्हैया द्वारा सेना पर आरोप के बयान के बाद जैसे कुछ मीडिया चैनलों में जैसे जान सी आ गयी थी; किन्तु अब मंगलवार को हुई हंदवाड़ा की हिंसा को जिस तरीके से मीडिया ने पेश किया वो वाकई शर्मनाक था। दरअसल, हंदवाड़ा में कुछ शरारती तत्वों ने एक छात्रा के साथ छेड़छाड़ और मारपीट की, इसके बाद उपद्रवियों ने सेना के खिलाफ लोगों को उकसाया, जिससे हालात बिगड़ गये। इस दौरान हालात पर काबू पाने के लिए सेना को फायरिंग करनी पड़ी जिसमें एक महिला समेत तीन लोगों की मौत हो गई और चार लोग जख्मी हुए थे।

यह खबर कुछेक ऑनलाइन न्यूज से कुछ इस तरह चली कि आज घाटी के हंदवाड़ा में हुई एक घटना में सड़कों पर विरोध प्रदर्शन कर रहे लोगों पर भारतीय सेना के जवानों ने गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। इस गोलीबारी के बाद मची भगदड़ में जहाँ कई लोग घायल हो गए वहीं सेना की गोलियों का शिकार हुए २ नौजवानों की मौके पर ही मौत हो गई। लोगों के विरोध प्रदर्शन की वजह आर्मी के एक जवान की घिनौनी करतूत थी जिसमें उसने एक कॉलेज की स्टूडेंट के साथ छेड़छाड़ की थी। मारे गए लड़कों में से एक का नाम मोहम्मद इकबाल है, जोकि कुपवोर के बोमहाम इलाके का रहने वाला है वहीं दूसरे लड़के का नाम नईम कदीर भट्ट है जोकि हंदवाड़ा से ही है। जबकि लड़की ने सामने आकर सारी सच्चाई सामने रख दी खुद पीड़ित लड़की ने सामने आकर बताया कि 'मैं अपने स्कूल से वापस आ रही थी उसी वक्त मैंने अपना स्कूल बैग अपनी दोस्त को दिया और बाथरूम जाने लगी। तभी एक स्थानीय लड़का वहां आया और उसने मेरा बैग छीनने की कोशिश की, मैंने उस लड़के का विरोध किया तो उसने मुझे थप्पड़ मारा। तभी एक पुलिसवाला आया और मुझे पुलिस स्टेशन ले गया। बाद में उस लड़के ने और भी लड़कों को भड़काया जिससे माहौल खराब हो गया।'

आज कश्मीर में राष्ट्रद्रोही शक्तियाँ ताकतवर होती प्रतीत हो रही हैं, जिन्होंने घाटी के लोगों को सैनिकों द्वारा एक कश्मीरी लड़की को छेड़ने की घटना की अफवाह पर भड़का दिया है, जब वो लड़की सामने आकर सच्चाई बता चुकी है, फिर भी घाटी में लगी आग शान्त नहीं हो रही है । बिना बात के भड़की हुई जनता पुलिस की गोलियों का शिकार हो रही है और यही बात अलगाववादियों की कामयाबी दर्शाती है । कुछ मीडिया चैनल सैनिक और पुलिस कार्यवाही की तस्वीरें दिखाकर देश की भावनायें भड़काने का काम कर रहे हैं । वो नहीं जानते कि सेना किन हालातों में वहाँ काम कर रही है, अभी हाल ही में एक मुठभेड़ के दौरान कश्मीरियों की भीड़ कार्यवाही के बीच में ही सेना के खिलाफ नारेबाजी और पत्थरबाजी कर रही थी । सेना को एक तरफ तो आतंकवादियों से मुकाबला करना पड़ रहा है, दूसरी तरफ भटके हुए कश्मीरी नौजवान सेना के खिलाफ अपनी कार्यवाही कर रहे हैं । हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि हमारी किसी भी हरकत से हमारी सेना का मनोबल गिरने न पाये, अगर ऐसा होता है तो हमारी सुरक्षा खतरे में पड़ जायेगी । इराक का उदाहरण हमारे सामने है जहाँ 200-300 आतंकवादियों के सामने 10,000 की इराकी सेना भी भाग खड़ी हुई थी।

कश्मीर कभी भारत के सबसे बड़े राज्यों में से एक हुआ करता था। आज भी धरती का स्वर्ग कश्मीर को ही माना जाता है। पर अब कश्मीर असलियत में कश्मीर रहा ही नहीं, यहां तो कश्मीर के कई टुकड़े हो चुके हैं। वैध और अवैध रूप से कश्मीर पर 3 देशों की हुकूमत है। जम्मू और कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है, तो पाक अधिकृत कश्मीर और गिलगित बाल्टिस्तान पर पाकिस्तान का अवैध कब्जा है। वहीं अक्साई चिन पर चीनी कब्जा है। पिछले दिनों अभिनेता अनुपम खेर ने कहा था कि जिस दिन संविधान का अनुच्छेद 370 हटेगा और बंगाल, पंजाब, गुजरात तथा देश के अन्य भागों के लोगों को जम्मू-कश्मीर में बसने की अनुमति होगी, उस दिन ''कश्मीर समस्या'' सुलझ जाएगी। कश्मीर की असली समस्या अलगाववादी नेता है। 2011 में विकीलीक्स ने खुलासा करते हुए कहा था कि कश्मीर की राजनीति में पैसे का बोलबाला है। उसे देखकर नहीं लगता कि यह मामला सुलझ सकता है। विकीलीक्स ने अमेरिकी डिप्लोमैट्स के केबल्स के हवाले से लिखा था कि 'अलगाववादी नेताओं में पैसे का लालच इतना है कि वो अपने फायदे के लिए यहां की समस्या का समाधान नहीं होने देना चाहते।' फरवरी 2006 के एक केबल में तब अमेरिकी राजदूत डेविड मलफर्ड ने अपने विदेश मंत्रालय को लिखा था कि 'कश्मीर की राजनीति डल झील जितनी गंदी है।' विकीलीक्स के मुताबिक कश्मीर के लगभग सभी अलगाववादी नेता भारत और पाकिस्तान दोनों से पैसे लेते हैं और वो कश्मीर से लेकर दुबई तक में जायदाद खरीदते हैं। अब हम कैसे मान लें कि इस खेल में सिर्फ अलगाववादी नेता शामिल हैं? वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण से लेकर लेखिका अरुधंति राय, वामपंथी, सेकुलर सब के सब एक सुर में बोलते दिखाई देते हैं हमें नहीं पता इन लोगों को देश का विरोध करने का क्या मिलता है किन्तु इतना पता है कि अतीत में गद्दारों के कारण ही भारत देश हजार वर्षो के करीब गुलाम रहा था।

– राजीव चौधरी

सार्वदेशिक वीरांगना दल का शिविर जम्मू में दिनांक 5 जून से 12 जून 2016

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर 2016 इस बार जम्मू शहर में 5 से 12 जून 2016 तक लगाया जाएगा। इसमें भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु की वे वीरांगनाएं जिन्होंने पहले भी कम-से-कम दो शिविरों में भाग लिया हो आ सकती हैं। दिनांक 15 मई 2016 तक अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर दे दें ताकि व्यवस्था सुचारु रूप से हो सके।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	विमला मलिक
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्षा
96722-86863	98107-02760	99102-34595	98102-74318

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य आर्य समाजों तथा अन्य संस्थानों के कार्यक्रम में : एक विवरण

(1) 7 फरवरी 2016 को सार्वदेशिकआर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर नियुक्त होने के पश्चात् श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य द्वारा 14 फरवरी 2016 को फर्रुखाबाद (उ.प्र.) की आर्य समाज में गए जहां उनका सभी पदाधिकारियों तथा सदस्यों द्वारा शाल पहनाकर भावभीना स्वागत किया गया। श्री आर्य ने अपने सम्बोधन में आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके कंधों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी सौंप दी गई है जिसे वह देश के सभी आर्यजनों के सहयोग से ही पूरा कर पायेंगे।

(2) 16 फरवरी 2016 को श्री आर्य द्वारा मुरादाबाद (उ.प्र.) में आर्य समाज मंडीबांस में पधारे जहां वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा था। यह वह समाज है जिसकी स्थापना ऋषिवर ने अपने हाथों से की थी। यहां शहर की अन्य आर्य समाजों के आर्यजन भी उपस्थित थे। उपस्थिति काफी अच्छी थी। यहां पर भी सभी समाजों के द्वारा श्री आर्य का शाल ओढ़ाकर भव्य स्वागत किया गया। श्री आर्य ने इस अवसर पर आर्य समाज बांसमंडी व नजीबाबाद से ब्रह्मा के रूप में पधारी सुश्री प्रियंवदा वेदभारती के गुरुकुल को आर्थिक सहयोग करने की घोषणा की। श्री आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि युवा शक्ति को आर्य समाज से जोड़ना उनका मुख्य कार्यक्रम रहेगा।

(3) 21 फरवरी 2016 को श्री सुरेशचन्द्र आर्य का जामनगर में गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। गुजरात राज्य से पहली बार श्री आर्य को सार्वदेशिक सभा का प्रधान चुने जाने पर सभी गौरवान्वित महसूस कर रहे थे। श्री आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्यसमाज के सामने आज अनेकों चुनौतियां हैं जिन्हें सबके सहयोग से मिलजुल कर पूरा करना है।

(4) 28 फरवरी 2016 को अहमदाबाद की सभी आर्य समाजों द्वारा आर्य समाज कांकरियाके सत्संग भवन में श्री आर्य का सम्मान किया गया जिसके प्रति उन्होंने हार्दिक आभार व्यक्त किया।

(5) 5 मार्च 2016 को श्री आर्य ने आर्य समाज गांधीधाम की विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती की 193वीं जन्म-जयन्ती का भव्य आयोजन था। गुजरात के राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

(6) 7 मार्च 2016 को श्री आर्य ने टंकारा में महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट द्वारा मनाये जा रहे बोधोत्सव पर्व की अध्यक्षता की जिसमें भारत सरकार के केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कुंडारिया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य समाज को अब जागना होगा। हमें अपने आप को पहले बदलना होगा तभी हम समाज और राष्ट्र को बदलने की सोच सकते हैं। श्री आर्य ने गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी टंकारा ट्रस्ट को आर्थिक सहायता देने की घोषणा की। शाम को श्री आर्य, आर्य समाज टंकारा गए और वहां उन्होंने कमरा निर्माण हेतु सहयोग करने की घोषणा की।

(7) 12 मार्च 2016 को श्री आर्य हरियाणा के गुरुकुल झज्जर पधारे जहां गुरुकुल की स्थापना का शताब्दी महोत्सव मनाया जा रहा था। यहां पर भी सार्वदेशिक सभा के प्रधान के रूप में श्री आर्य का विशेष सम्मान किया गया। यहां पर भी श्री आर्य ने अपने सम्बोधन में यही कहा कि पहले हमें अपने आपको सच्चा आर्य बनाना पड़ेगा तभी हम ऋषि दयानन्द के सपनों को पूरा कर सकेंगे। यहां पर गुरुकुल की सहायतार्थ श्री आर्य द्वारा सहायता देने की घोषणा की गई

(8) 20 मार्च 2016 को श्री आर्य वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ पधारे जहां पर पूज्य आचार्य ज्ञानेश्वरजी द्वारा अखण्ड अग्निहोत्र का भव्य शुभारम्भ किया गया। पूज्य आचार्य जी ने इस अवसर पर अग्न्याधान श्री आर्य जी के द्वारा ही करवाया था। श्री आर्य ने इस ऐतिहासिक कार्य में सहयोग हेतु आचार्य जी को दक्षिणा भेंट की।

(9) 23 मार्च 2016 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली में आयोजित होली मंगल मिलन समारोह में श्री आर्य ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया जिसमें श्री आर्य का हजारों आर्यजनों की उपस्थिति में विशेष सम्मान किया गया। अपने सम्मान के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए श्री सुरेशजी आर्य ने कहाकि वह इस सम्मान को सभी के आशीर्वाद के रूप में ले रहे हैं ताकि वे अपने दायित्व को जिम्मेदारी से निभा सकें। श्री आर्य ने अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु सुखदेव के 85वें बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि देते हुए सरकार से मांग की कि देशद्रोही लोगों पर शिकंजा कसने के लिए सख्त कानून बनाया जाए। इस अवसर पर श्री आर्य द्वारा दिल्ली आ. प्र. सभा को आर्थिक सहयोग देने की घोषणा की गई।

(10) पूरे विश्व में मसालों के शहंशाह के रूप में विख्यात एम.डी.एच. लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर भामाशाह महाशय धर्मपाल जी के 93वें जन्म दिवस पर आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा आयोजित भव्य समारोह में श्री आर्य ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान के रूप में महाशयजी को शाल ओढ़ाकर उन्हें जन्म-दिन की बधाई दी।

(11) 30 मार्च 2016 को श्री आर्य ने मांडवी-कच्छ में श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा स्मारक 'क्रान्ति तीर्थ' में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। आज का दिन श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा का 86वां निर्वाण दिवस था जिसे गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा श्रद्धांजलि समारोह के रूप में आयोजित किया गया था। श्री आर्य द्वारा तथा अन्य अतिथियों द्वारा श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा को सच्चे सपूत के रूप में स्मरण किया गया। 'क्रांति तीर्थ' के पदाधिकारियों द्वारा इस अवसर पर श्री आर्य को विशेष रूप से सम्मानित भी किया गया।

(12) आगामी 3 अप्रैल 2016 को श्री आर्य कालीकट में डॉ. राजेश आर्य द्वारा आयोजित एक अभूतपूर्व एवं अविस्मरणीय कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगे जिसमें समुद्र के किनारे पचास हजार से भी अधिक स्त्री-पुरुष वैदिक मंत्रों का पाठ करेंगे।

आर्य समाज रोहतास नगर, दिल्ली का स्वर्ण जयन्ती उत्सव सम्पन्न

समारोह में मंचस्थ अतिथियों के साथ महाशय धर्मपाल जी, साध्वी उत्तमा यति जी एवं महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं अन्य

आर्य समाज रोहतास नगर का स्वर्ण जयन्ती-वर्ष समारोह 17 अप्रैल 2916 को धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच. चेयरमैन) का जोरदार स्वागत किया गया। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य व महामंत्री श्री विनय आर्य के साथ अनके आर्य समाजों के अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में पूर्वी दिल्ली के मेयर श्री हर्षदीप मल्होत्रा, पूर्व विधायक श्री जितेन्द्र महाजन एवं श्री विपिन शर्मा, श्री राज कुमार शर्मा भी उपस्थित थे। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। यज्ञ ब्रह्मा कु. अंजलि आर्या व साध्वी डॉ. उत्तमायति ने महिला सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महिलाओं को राष्ट्र निर्माण के योगदान के लिए प्रेरित किया तथा बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ आंदोलन की मुख्य कार्यकर्त्ता सुश्री पूनम आर्या ने राष्ट्र निर्माण में महिलाओं के योगदान का महत्त्व प्रतिपादित किया। प्रधान श्री रामपाल पांचाल ने मंच संचालन करते हुए सभी का अभिनन्दन किया। *- मन्त्री*

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

35वां वैचारिक क्रान्ति शिविर

19 मई, 2016 से 29 मई, 2016

उद्घाटन समारोह	समापन समारोह
22 मई प्रातः 10 बजे	29 मई प्रातः 10 बजे से

आर्यजन दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें।

निवेदक: महाशय धर्मपाल (प्रधान), धर्मपाल गुप्ता (वरिष्ठ उप प्रधान), जोगेन्द्र खट्टर (महामन्त्री), योगेश आर्य (कोषाध्यक्ष)

आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर में व्यायामशाला का शिलान्यास

आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर, दिल्ली की व्यायामशाला की आधारशिला श्री सुखवीर सिंह आर्य मंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के कर कमलों द्वारा

रखी गयी। यज्ञ ब्रह्मा श्री रामसेवक शास्त्री थे। इस अवसर पर प्रधान डॉ. जगराम यादव, मंत्री डॉ. मुकेश आर्य, कोषाध्यक्ष दिनेश सोलंकी, श्री लोकेश आर्य, श्री पद्म सोलंकी, श्री चरण सिंह, श्रीमती राजवती आर्या, श्रीमती राजवती धामा इत्यादि महानुभाव उपस्थित थे।

-डॉ. मुकेश कुमार आर्य, मंत्री

प्रथम पृष्ठ का शेष

142वां आर्य समाज स्थापना दिवस ....

चाहिए जिससे आयु, विद्या, यश व बल रूपी आशीर्वाद मिलता है।'' आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुरेन्द्र रैली ने आर्य जनों को संकल्प कराया कि ''दिल्ली की प्रत्येक आर्य समाज में आर्य वीर व आर्य वीरांगनाओं की नियमित शाखा चलनी चाहिए।'' श्री रैली ने कहा कि ''आर्य समाज का भविष्य युवाओं पर निर्भर करता है, इसलिए युवाओं को अधिक से अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है जिसके लिए युवाओं को समाज से जोड़ने के नवीन कार्यक्रम बनाये जाने चाहिए।'' दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने इस अवसर पर आर्य समाज के नवीनतम कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए संगठन को मजबूत करने पर बल दिया। उन्होंने समस्त आर्य जगत को आह्वान किया कि आगामी 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर 1000 यज्ञों का वृहत आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर आचार्य भद्रकाम वर्णी जी, को 'श्री लालमन आर्य स्मृति वैदिक विद्वान्' पुरस्कार, आर्य वीर दल दिल्ली के शिक्षक श्री प्रेम आर्य को श्री धीरज घई सुपुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार घई स्मृति आर्य कार्यकर्ता पुरस्कार एवं वैदिक प्रचारक श्री सत्य प्रकाश जी को माता कमलेश सहगल स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में संरक्षक सदस्य सर्वश्री रामनाथ सहगल, विद्यामित्र ठुकराल, मदन मोहन सलूजा,शिव भगवान लाहौटी, ओम प्रकाश घई, उपप्रधान सर्वश्री विक्रम नरुला, राजेन्द्र दुर्गा, कीर्ति शर्मा, अजय सहगल एवं श्रीमती उषा किरण आर्य मंत्री सर्वश्री सतीश चड्डा, जोगेन्द्र खट्टर, अभिमन्यु चावला, एस. पी. सिह, अरुण प्रकाश वर्मा एवं राजीव चौधरी ने सक्रिय भूमिका निभाई।

इस अवसर आचार्य ब्रह्मदेव जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। यजमान परिवार के रूप में श्रीमती सुनीता एवं श्री विनीत बहल जी, श्रीमती संगीता एवं श्री विपिन भल्ला जी, श्रीमती एवं श्री सुरेन्द्र पाल सिंह जी, श्रीमती नीलम एवं श्री जितेन्द्र पाहुजा जी, एवं श्रीमती ज्योति एवं श्री अभिनव सहगल जी सपरिवार सम्मलित हुए।

कार्यक्रम के अन्त में आर्य वीर दल प्रीत विहार के बच्चों द्वारा आर्य समाज के प्रचार पर आधारित नाटिका प्रस्तुत की एवं दिल्ली की आर्य समाजों द्वारा संचालित विद्यालयों के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम के अन्त में ऋषि मेला के प्रतिभाशाली विजेताओं को पारितोषिक वितरण किये गये। कार्यक्रम का संचालन श्री सुरेद्र कुमार रैली जी ने किया।

दीप प्रज्जवलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ। समारोह का भव्य मंच- उपस्थित अतिथि एवं अधिकारीगण। उद्बोधन देते समारोह अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी

सांस्कृतिक प्रस्तुति देते महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, ग्रेटर कैलाश एवं संस्कृतकुलम के ब्रह्मचारी

श्री लालमन आर्य स्मृति वैदिक विद्वान पुरस्कार प्राप्त करते आचार्य भद्रकाम वर्णी जी, श्री धीरज घई सुपुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार घई स्मृति आर्य कार्यकर्ता पुरस्कार प्राप्त करते श्री प्रेम आर्य जी, एवं बोध दिवस पर सम्पन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का वितरण करते श्री सुरेन्द्र रैली जी एवं श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

जम्मू कश्मीर में प्रथम बार आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैदिक विचारों का प्रायोगिक स्वरूप है। महर्षि दयानन्द ने शास्त्रीय आधार पर कान्तदर्शी वैवाहिक दर्शन प्रतिपादन किया है। उक्त विचार राकेश चौहान प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर ने प्रथम बार जम्मू में आयोजित आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन में व्यक्त किये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर द्वारा आर्य समाज बक्शी नगर जम्मू में आयोजित 14वें राष्ट्रीय आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन में उन्होंने कहा कि 'इस प्रकार के प्रयासों से आर्य परिवारों को आपस में जोड़ने में सहायता मिलेगी।' सम्मेलन का शुभारम्भ अतिथियों सर्वश्री

देवदत्त त्रेहन, आचार्य विद्याभानु शास्त्री, राकेश चौहान, प्रधान भारत भूषण आर्य उपप्रधान, रविकान्त गुप्ता मंत्री, योगेश गुप्ता, कोषाध्यक्ष राम प्रसाद याज्ञिक द्वारा दीप प्रज्ज्वलन व ईश्वर स्तुति प्रार्थना मंत्रों के उच्चारण के साथ हुआ।

कार्यक्रम में कोटा जिला सभा द्वारा राकेश चौहान प्रधान जम्मू कश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा का राजस्थानी साफा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर व गायत्री मंत्र से सुसज्जित केसरिया पटका पहनाकर सम्मान किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने अपने संदेश में कहा कि विगत वर्ष में आर्य समाज द्वारा आर्य परिवारों के वैवाहिक सम्बन्धों के माध्यम से परस्पर जोड़ने के लिये एक वृहद कार्य योजना का निर्माण किया गया जिसकी परिणिति स्वरूप ये सम्मेलन आयोजित किये गये। अब तक 13 सम्मेलन सफलता पूर्वक आयोजित किये जा चुके हैं। जिसके माध्यम से लगभग 700 लोग वैवाहित सम्बन्ध में बंध चुके हैं।'

कार्यक्रम विवाह योग्य युवक-युवतियों के अभिभावकों ने मंच पर आकर आत्म विश्वास के साथ अपना परिचय दिया। रिश्ते सम्बन्धी आपसी बातचीत करने के लिए पृथक से व्यवस्था की गई थी। सम्मेलन में जिन युवक-युवतियों का पंजीकरण किया गया था उनकी विवरणिका निःशुल्क प्रदान की गयी। आर्य समाज बक्शी नगर जम्मू द्वारा आगन्तुकों व अतिथियों के लिए चाय-नाश्ता एवं भोजन व आवास की निःशुल्क व्यवस्था की गई थी। आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के प्रधान राकेश चौहान ने सभी आगंतुको का आभार व्यक्त किया। *-अरविन्द पाण्डेय, राष्ट्रीय प्रतिनिधि*

Glimpses of the Atharva Veda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Long Life

Through a hundred autumns may we see.

Through a hundred autumns may we live.

Through a hundred autumns may we recognise.

Through a hundred autumns may we ascend.

Through a hundred autumns may we thrive.

Through a hundred autumns may we arise.

Through a hundred autumns may we prosper.

For more than a hundred autumns.

पश्येम शरद: शतम्।।

Pasyema saradah, satam

जीवेम शरद: शतम्।।

Jivema saradah satam

बुध्येम शरद: शतम्।।

Budhyema saradah satam

रोहेम शतद: शतम्।।

Rohema saradah satam

पूषेम शरद: शतम्।।

Pusema saradah satam

भवेम शरद: शतम्।।

Bhavema saradah satam

भूयेम शरद: शतम्।।

Bhuyema saradah satam

भूयसी: शरद: शतात्।। *(अथर्व. 67/1-8)*

Bhuyasih saradah satat

Glory of Brahmacharya

The concept of Brahmacharya is an astounding discovery of the Vedic culture; Brahma (great), Charya (movement). A movement towards becoming great is Brahmacharya. It signifies physiological,psychological and spiritual development of a human being. Physiologically it means control over sex- life. Unbridled sexual indulgence ends in the ruination of health. Semen which creates life, if absorbed in the body, recreates vigour. Sex life, through a biological instinct, if channelled to higher purposes, releases unlimited energy that can be utilised for overall development.

The student known as Brahmachari lives in the precincts of his preceptor. Avoiding a life of luxury, he puts forth all his efforts to the acquisition of knowledge. The teacher imparts the knowledge of Brahma, that is divinity, making the student lead a full life.

Chapter XI, hymn 5 with 26 verses extols the life of a Brahmachari. The glory of simplicity,of purity and of endurance is narrated in the hymn. The last verse says, "Shaping the manners, he stands performing penance as if on the surface of the sea, bathed, brown, ruddy and shining briliantly on the earth."

तानि कल्पद् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे पो तिष्ठत्तप्यमान: समुद्र। स स्नातो बभु: पिङ्गल: पृथिव्यां बहु रोचते।।*(अथर्व. 5/26)*

Tani kalpad brahmacari salilasya prsthe tapotisthattap yamanah samudre. sa snato babhruh pingalah prthivyam bahu rocate.

Expulsion of Defects from All Parts of the Body

"Out of your heart, out of your lungs, out of your intestine, out of your two sides, out of your kidneys; out of your spleen and out of your lever,Ipluck *off* your wasting disease".

"Out of your bones, out of your marrow, out of your sinews, out of your blood vessels, out of your two hands, out of your fingers and out of your nails, Ipluck *off* your wasting disease".

"Whatever all-pervading wasting disease has penetrated in each and every part of your limbs, and in each and every hair,in every joint and in skin, that wasting disease is hereby plucked off with the scattering and healing rays of the sun."

हृदयात्ते परि क्लोम्नो हलीक्ष्णात्पार्श्वा भयाम्। यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीह्न: यक्नस्ते वि वृहामसि।। (अथर्व. 33/3)

Hrdayatte pari klomno haliksnatparsvabhyam।

yaksmarh matasnabhyarh plihvah yaknaste vi brhamasi।।

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्य: स्नावभ्यो धमनिभ्य:। यक्ष्मं पाणिभ्ययामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते ।। (अथर्व. 33/6)

Asthibhyaste majjabhyah snavabhyo dhamanibhyah।

Yakarn panivyamangulibhyo nakhebhyo vi brhami te।।

अंगेअंगे लोम्निलोम्नि यस्ते पर्वणि पर्वणि। यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीबर्हेण विष्व:कं वि वृहामसि।।

(अथर्व. 33/7)

Ange ange lomni lomni yaste parvani parvani.

yaksam tvacasyam te vayam kasyapasya vibartena visvancam vi vrhamasi.

To be Continued.....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत भाषा रहस्य

-आचार्य संदीप कुमार उपाध्याय

नव वर्ष 2073 के शुभअवसर पर अपने प्रबुध पाठकों/विद्यार्थियों एवं जो अपना भाषा ज्ञान बढ़ाने के इच्छुक हों उनके लिए संस्कृत भाषा को बहुत ही सरल तरीके से सिखाने का प्रयास करने का प्रयत्न कर रहा हूं। संस्कृत एक भाषा ही नहीं वरन् यौगिक क्रियाओं का संमिश्रण भी है जिसे मात्र बोलने से अनेक योगाभ्यास स्वत: हो जाता है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। इस महत्त्वपूर्ण भाषा ज्ञान को आप तक आर्य सन्देश के माध्यम से पहुंचा रहे हैं आचार्य संदीप जी। -सम्पादक

मित्रो, संस्कृत दुनिया की पहली पुस्तकीय भाषा होने के कारण संस्कृत भाषा को विश्व की प्रथम भाषा मानने में कहीं कोई संशय की गुंजाइश नहीं हैं। इसके सुस्पष्ट व्याकरण और वर्णमाला की वैज्ञानिकता के कारण सर्वश्रेष्ठता भी स्वयं सिद्ध है।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण साहित्य की धनी होने से इसकी महत्ता भी निर्विवाद है। इतना सब होने के बाद भी बहुत कम लोग ही जानते हैं कि संस्कृत भाषा अन्य भाषाओं की तरह केवल अभिव्यक्ति का साधन मात्र ही नहीं है अपितु वह मनुष्य के सर्वाधिक सम्पूर्ण विकास की कुंजी भी है। इस रहस्य को जानने वाले मनीषियों ने प्राचीन काल से ही संस्कृत को देव भाषा और अमृतवाणी के नाम से परिभाषित किया है। संस्कृत केवल स्वविकसित भाषा नहीं बल्कि संस्कारित भाषा है इसीलिए इसका नाम संस्कृत है। संस्कृत को संस्कारित करने वाले भी कोई साधारण भाषाविद् नहीं बल्कि महर्षि पाणिनिय महर्षि कात्यायिनि और योग शास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं। इन तीनों महर्षियों ने बड़ी ही कुशलता से योग की क्रियाओं को भाषा में समाविष्ट किया है। यही इस भाषा का रहस्य है। जिस प्रकार साधारण पकी हुई दाल को शुद्ध घी में जीरा या मैथी या लहसुन या हींग का तड़का लगाया जाता है, तो उसे संस्कारित दाल कहते हैं। घी या जीरा या लहसुन, मैथी या हींग आदि सभी महत्वपूर्ण औषधियाँ हैं। ये शरीर के तमाम विकारों को दूर करके पाचन संस्थान को दुरुस्त करती हैं। दाल खाने वाले व्यक्ति को यह पता ही नहीं चलता कि वह कोई कटु औषधि भी खा रहा है या अनायास ही आनन्द के साथ दाल खाते-खाते इन औषधियों का लाभ ले लेता है।

ठीक यही बात संस्कारित भाषा संस्कृत के साथ सटीक बैठती है। जो भेद साधारण दाल और संस्कारित दाल में होता है या वैसा ही भेद अन्य भाषाओं और संस्कृत भाषा के बीच है। संस्कृत भाषा में वे औषधीय तत्व क्या हैं? यह जानने के लिए विश्व की तमाम भाषाओं से संस्कृत भाषा का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है। संस्कृत में निम्नलिखित चार विशेषताएँ हैं जो उसे अन्य सभी भाषाओं से उत्कृष्ट और विशिष्ट बनाती हैं।

1. अनुस्वार (अं) और विसर्ग (अ:)

संस्कृत भाषा की सबसे महत्वपूर्ण और लाभ दायक व्यवस्था है, अनुस्वार और विसर्ग। पुल्लिंग के अधिकांश शब्द विसर्गान्त होते हैं- यथा- राम: बालक: हरि: भानु: आदि। और

नपुंसक लिंग के अधिकांश शब्द अनुस्वारान्त होते हैं- यथा- जलं वनं फलं पुष्पं आदि।

अब जरा ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि विसर्ग का उच्चारण और कपालभांति प्राणायाम दोनों में श्वास को बाहर फेंका जाता है। अर्थात् जितनी बार विसर्ग का उच्चारण करेंगे उतनी बार कपालभांति प्रणायाम अनायास ही हो जाता है। जो लाभ कपालभांति प्रणायाम से होते हैं, वे केवल संस्कृत के विसर्ग उच्चारण से प्राप्त हो जाते हैं।

उसी प्रकार अनुस्वार का उच्चारण और भ्रामरी प्राणायाम एक ही क्रिया है । भ्रामरी प्राणायाम में श्वास को नासिका के द्वारा छोड़ते हुए भौंरे की तरह गुंजन करना होता है, और अनुस्वार के उच्चारण में भी यही क्रिया होती है। अत: जितनी बार अनुस्वार का उच्चारण होगा , उतनी बार भ्रामरी प्राणायाम स्वत: हो जावेगा।

कपालभांति और भ्रामरी प्राणायामों से क्या लाभ है? यह बताने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि स्वामी रामदेव जी जैसे संतों ने सिद्ध करके सभी को बता दिया है। मैं तो केवल यह बताना चाहता हूँ कि संस्कृत बोलने मात्र से उक्त प्राणायाम अपने आप होते रहते हैं।

जैसे हिन्दी का एक वाक्य लें- ''राम फल खाता है''

इसको संस्कृत में बोला जायेगा- ''राम: फलं खादति ''

राम फल खाता है, यह कहने से काम तो चल जायेगा, किन्तु राम: फलं खादति कहने से अनुस्वार और विसर्ग रूपी दो प्राणायाम हो रहे हैं। यही संस्कृत भाषा का रहस्य है। संस्कृत भाषा में एक भी वाक्य ऐसा नहीं होता जिसमें अनुस्वार और विसर्ग न हों। अत: कहा जा सकता है कि संस्कृत बोलना अर्थात् चलते फिरते योग साधना करना।

2- शब्द-रूप

संस्कृत की दूसरी विशेषता है शब्द रूप। विश्व की सभी भाषाओं में एक शब्द का एक ही रूप होता है, जबकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द के 25 रूप होते हैं। जैसे राम शब्द के निम्नानुसार 25 रूप बनते हैं। यथा:- रम् (मूल धातु)

प्रथमा	रामं	रामौ	रामा:
द्वितीया	राम	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्यां	रामै:
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्यां	रामेभ्य:
पंचमी	रामत्	रामाभ्यां	रामेभ्य
षष्ठी	रामस्य	रामयो:	रामाणां
सप्तमी	रामे	रामयो:	रामेषु
अष्टमी	हे राम!	हे रामौ!	हे रामा:!

ये 25 रूप सांख्य दर्शन के 25 तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिस प्रकार पच्चीस तत्वों के ज्ञान से समस्त सृष्टि का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, वैसे ही संस्कृत के पच्चीस रूपों का प्रयोग करने से आत्म साक्षात्कार हो जाता है और इन 25 तत्वों की शक्तियाँ संस्कृतज्ञ को प्राप्त होने लगती है।

सांख्य दर्शन के 25 तत्व निम्नानुसार हैं:- आत्मा (पुरुष), (अंत:करण 4) मन बुद्धि चित्त अहंकार, (ज्ञानेन्द्रियाँ 5) नासिका जि वा नेत्र त्वचा कर्ण, (कर्मेन्द्रियाँ 5) पाद हस्त उपस्थ पायु वाक्, (तन्मात्रायें 5) गन्ध रस रूप स्पर्श शब्द, (महाभूत 5) पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश।

3- द्विवचन

संस्कृत भाषा की तीसरी विशेषता है द्विवचन। सभी भाषाओं में एक वचन और बहु वचन होते हैं जबकि संस्कृत में द्विवचन अतिरिक्त होता है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्यसमाज सागरपुर, नई दिल्ली का
36वां वार्षिकोत्सव एवं नव निर्मित भवन का उद्घाटन

आर्य समाज सागरपुर का 36वां वार्षिकोत्सव एवं नवनिर्मित हॉल नं. 2 का उद्घाटन 22 से 24 अप्रैल 2016 के मध्य सम्पन्न होगा। कार्यक्रमके अन्यर्गत श्री नन्द लाल निर्भय आर्य यज्ञ ब्रह्मा होंगे भजन एवं प्रवचन श्री स्वामी यज्ञमुनिजी 'वानप्रस्थी' स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (गुरुकुल, गौतम नगर) प्रस्तुत करेंगे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र पाल सिंह, मोहन नगर (दानवीर, समाज सेवक एवं धर्म प्रेमी) एवं श्री सुरेश कुमार यादव (दानवीर, समाज सेवक एवं भारत यादव रत्न) होंगे। विशिष्ट आमंत्रित अतिथि श्री विनय आर्य महामंत्री दि.आ. प्र. सभा, श्री प्रवीन राजपूत निगम पार्षद, सागरपुर, इत्यादि होंगे। -*मान्धाता सिंह आर्य, मंत्री*

आर्य समाज, खलासी लाईन का
62वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज खलासी लाईन सहारनपुर का 62वां वार्षिकोत्सव 8 से 10 अप्रैल 2016 तक बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता संन्यासी प्रेम मुनि जी ने की तथा मंच संचालन डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री व डॉ. राजवीर सिंह वर्मा ने संयुक्त रूप से किया। आचार्य सोमदेव जी ने अपने प्रवचन में कहा गृहस्थअपने आप में तीनों आश्रमों ब्रह्मचर्य, वनप्रस्थ व सन्यास आश्रम को समाहित करता है। दोनों पति-पत्नी एक दूसरे के अनुकूल रहेंगे तो सुख रहेगा वरना दु:ख रहेगा। तत्पश्चात् आचार्य जी ने कहा कि गरीबी होते हुए भी धर्म के प्रति श्रद्धा हैतो आपके दिन अच्छे हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा के युवा कार्यकर्ताओं महिलाओं की विशेष भागीदारी रही।

-*रविकान्त राणा, मंत्री*

आर्य समाज ए.जी.सी.आर. में
वेद प्रवचन एवं श्री राम कथा

आर्यसमाज ए.जी.सी.आर. एन्क्लेव में 15 से 17 अप्रैल 2016 के मध्य यज्ञ, वेद प्रवचन एवं संगीतमय श्री राम कथा का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। संगीतमय श्रीराम कथा पं. नरेश दत्त जी द्वारा प्रस्तुत की गयी। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री नरेश अग्रवाल एवं डॉ.ओम प्रकाश भटनागर 'यज्ञश्री' का विशेष सहयोग रहा। - *मन्त्री*

आर्यसमाज सरसौला खुर्द (बिहार) का
वार्षिकोत्सव सम्पन्न
108 दम्पतियों ने दी यज्ञाहुतियां

जनक नंदिनी सीता की जन्म स्थली नेपाल की सीमा के पास स्थित आर्यसमाज सरसौला खुर्द का वार्षिकोत्सव 7 से 10 अप्रैल 2016 तक मनाया गया। जिसमें होशंगाबाद मध्यप्रदेश के आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी के उपदेश व पं. प्रमोद आर्य जी के भजनोपदेश हुए। 51 वेदियों पर 108 जोड़े बैठाये गए। इनमें लगभग 70 प्रतिशत दम्पत्ति व आगंतुक महानुभाव आर्यसमाज के यज्ञ में प्रथम बार सम्मिलित हुए। मंच संचालन आर्यसमाज के प्रधान श्री राजन भास्कर ने किया। - *मन्त्री*

वैचारिक क्रान्ति के लिए
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

मैं आर्यसमाजी कैसे बना?
मैं अपने बाबाजी व पिताजी की प्रेरणा से आर्य समाजी बना

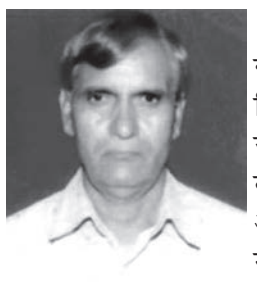

मैं गांव सिखौड़ा जिला गाजियाबाद निवासी हूं। जब मैं छोटा था हमारे गांव में एक आर्य भजनोपदेशक आते थे जिनको महाशय जी कहते थे, उनकी टीम में एक हारमोनियम जो वे खुद बजाते थे, एक ढोलक वाला व एक चिमटा बजाने वाला होता था, वे कई बार हमारे घर की बैठक या अन्य किसी की बैठक पर रुकते थे। वे दो सत्रों में दोपहर व रात को भजन व उपदेश करते थे तथा पाखण्डों पर प्रहार करते थे। वे महिलाओं को भारी लंहगा के स्थान पर साड़ी या सलवार कमीज पहनने की प्रेरणा देते थे। हमारे बाबाजी ने गायत्री मंत्र, नमस्तेजी, सत्यम्वद्, धर्मचर आदि अपनी बैठक की दीवारों पर लिखवाए हुए थे। मुझमें आर्य समाज के पहले बीज वहां से पड़े।

पिताजी दिल्ली में एन.पी.एल. में सर्विस करते थे उनके साथ हम दिल्ली के कमला नगर में आकर रहने लगे। यहां रहते हुए हम पटेल नगर के समाज में जाने लगे, फिर पिताजी ने विष्णु गार्डन में मकान बना लिया। तदुपरान्त विद्यार्थी जीवन में ही मुझे तिलक नगर समाज का सदस्य तथा पुस्तकालय अध्यक्ष बना दिया गया, फिर हम लोग विष्णु गार्डन छोड़कर उत्तम नगर आकर बस गये। यहां आने पर हम किरण गार्डन आर्य समाज से जुड़ गए। हमारे दोनों भाई पाखण्डी हो गए हैं। हम ही अपने बाबाजी व पिताजी की देन आर्य परम्परा पर चल रहे हैं। वर्ममान में मै आर्य समाज किरण गार्डन का मंत्री भी हूं। इस प्रकार मैं अपने बाबाजी व पिताजी की प्रेरणा से आर्य समाजी बन गया।

-*तेजवीर सिंह, उत्तम नगर, दिल्ली*

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान में
वैदिक परिवार शिविर

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान में वैदिक परिवार शिविर 20 से 22 मई 2016 तक डॉ. सोमदेव शास्त्री के निर्देशन में किया जा रहा है। विशेष प्रशिक्षण देने के लिए स्वामी सुधानन्द जी, योग गुरु उमाशंकर शास्त्री, भजनोपदेश श्री केशव देव शर्मा जी उपस्थित रहेंगे। शिविर आवासीय है तथा इसमें केवल दम्पत्ति भाग ले सकेंगे। इच्छुक संभागियों को अपना पंजीयन 5 मई 2016 तक कराना होगा। पंजीयन शुल्क प्रति व्यक्ति 100/- है। आवास व भोजन व्यवस्था न्यास की ओर से नि:शुल्क है। स्थानीय दम्पत्ति भी लाभ की दृष्टि से प्रात: 6 से रात्रि 9.30 बजे तक शिविर में आमंत्रित हैं। सम्पर्क सूत्र : नारायण मित्तल, संयोजक, मो. 9414169440

-*अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष*

पृष्ठ 3 का शेष

में संगठन भावना शून्य है। गुरु गोविन्द सिंह ने स्पष्ट सन्देश दिया कि कायरता भूलकर, स्वबलिदान देना जब तक हम नहीं सीखेंगे तब तक देश, धर्म और जाति की सेवा नहीं कर सकेंगे। अन्धविश्वास में अवतार की प्रतीक्षा करने से कोई लाभ नहीं होने वाला। अपने आपको समर्थ बनाना ही एक मात्र विकल्प है। धर्मानुकूल व्यवहार, सदाचारी जीवन, अध्यात्मिकता, वेदादि शास्त्रों का ज्ञान जीवन को सफल बनाने के एकमात्र विकल्प हैं।

1. आज हमारे देश में सेक्युलरता के नाम पर, अल्पसंख्यक के नाम पर, तुष्टिकरण के नाम पर अवैध बांग्लादेशियों को बसाया जा रहा है।

2. हज सब्सिडी दी जा रही है, मदरसों को अनुदान और मौलवियों को मासिक खर्च दिया जा रहा है, आगे आरक्षण देने की तैयारी है।

3. वेद, दर्शन, गीता के स्थान पर कुरान और बाइबिल को आज के लिए धर्म ग्रन्थ बताया जा रहा है।

4. हमारे अनुसरणीय रामायण के स्थान पर साई बाबा, गरीब नवाज, मदर टेरेसा को बढ़ावा दिया जा रहा है।

5. ईसाइयों द्वारा हिन्दुओं के धर्मान्तरण को सही और उसका प्रतिरोध करने वालों को कट्टर बताया जाता रहा है।

6. गौरी-गजनी को महान और शिवाजी और प्रताप को भगोड़ा बताया जा रहा है।

7. 1200 वर्षों के भयानक और निर्मम अत्याचारों की अनदेखी कर बाबरी और गुजरात दंगों को चिल्ला-चिल्ला कर भ्रमित किया जा रहा है।

8. हिन्दुओं के दाह संस्कार को प्रदूषण और जमीन में गाड़ने को सही ठहराया जा रहा है।

9. दीवाली-होली को प्रदूषण और बकरीद को त्यौहार बताया जा रहा है।

10. वन्दे मातरम, भारत माता की जय बोलने पर आपत्ति और कश्मीर में भारतीय सेना को बलात्कारी बताया जा रहा है।

11. विश्व इतिहास में किसी भी देश, पर हमला कर अत्याचार न करने वाली हिन्दू समाज को अत्याचारी और समस्त विश्व में इस्लाम के नाम पर लड़कियों को गुलाम बनाकर बेचने वालों को शांतिप्रिय बताया जा रहा है।

12. संस्कृत भाषा को मृत और उसके स्थान पर उर्दू, अरबी, हिबू और जर्मन जैसी भाषाओँ को बढ़ावा दिया जा रहा है।

हमारे देश, हमारी आध्यात्मिकता, हमारी आस्था, हमारी श्रेष्ठता, हमारी विरासत, हमारी महानता, हमारे स्वर्णिम इतिहास सभी को मिटाने के लिए सुनियोजित षडयंत्र चलाया जा रहा है। गुरु गोविन्द सिंह के पावन सन्देश- जातिवाद और कायरता का त्याग करने और संगठित होने मात्र से हिन्दू समाज का हित संभव है। आइये वैसाखी पर एक बार फिर से देश, धर्म और जाति की रक्षा का संकल्प लें।

पृष्ठ 6 का शेष

संस्कृत भाषा रहस्य

इस द्विवचन पर ध्यान दें तो पायेंगे कि यह द्विवचन बहुत ही उपयोगी और लाभप्रद है।

जैसे :- राम शब्द के द्विवचन में निम्न रूप बनते हैं :- रामौ, रामाभ्यां और रामयो:। इन तीनों शब्दों के उच्चारण करने से योग के क्रमश: मूलबन्ध, उड्डियान बन्ध और जालन्धर बन्ध लगते हैं, जो योग की बहुत ही महत्वपूर्ण क्रियायें हैं।

4. सन्धि

संस्कृत भाषा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है सन्धि। ये संस्कृत में जब दो शब्द पास में आते हैं तो वहाँ सन्धि होने से स्वरूप और उच्चारण बदल जाता है। उस बदले हुए उच्चारण में जि वा आदि को कुछ विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। ऐसे सभी प्रयत्न एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति के प्रयोग हैं।

''इति अहं जानामि'' इस वाक्य को चार प्रकार से बोला जा सकता है, और हर प्रकार के उच्चारण में वाक् इन्द्रिय को विशेष प्रयत्न करना होता है।

यथा:- 1. इत्यहं जानामि।

2. अहमिति जानामि।

3. जानाम्यहमिति ।

4. जानामीत्यह्।

इन सभी उच्चारणों में विशेष आभ्यंतर प्रयत्न होने से एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति का सीधा प्रयोग अनायास ही हो जाता है। जिसके फल स्वरूप मन बुद्धि सहित समस्त शरीर पूर्ण स्वस्थ एवं नीरोग हो जाता है।

इन समस्त तथ्यों से सिद्ध होता है कि संस्कृत भाषा केवल विचारों के आदान-प्रदान की भाषा ही नहीं, अपितु मनुष्य के सम्पूर्ण विकास की कुंजी है। यह वह भाषा है, जिसके उच्चारण करने मात्र से व्यक्ति का कल्याण हो सकता है। इसीलिए इसे देवभाषा और अमृतवाणी कहते हैं। -*क्रमश:*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 18 अप्रैल से रविवार 24 अप्रैल, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 21/22 अप्रैल, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 अप्रैल, 2016

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर

5 से 19 जून 2016

स्थान : एम.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, आर्य समाज पंजाबी बाग वैस्ट, दिल्ली-26

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शिविर में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी के शारीरिक एवं बौद्धिक पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण योग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। शिविर में दशम कक्षा उत्तीर्य आर्य वीर ही प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

प्रवेश शुल्क: शाखानायक 300/-, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक 500/- शिविरार्थी को पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

आवश्यक सामान : गणवेश-खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते, सफेद मोजे, लंगोट, लाठी, नोटबुक, हल्का बिस्तर, थाली, चम्मच, गिलास एवं अन्य दैनिक उपयोगी सामान।

नोट : शिविरार्थी स्थानीय आर्य समाज या आर्य वीर दल के अधिकारी का संस्तुति पत्र अथवा आर्य वीर दल के प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र और अपने दो चित्र साथ लाएं। शिविर में उन्हें ही प्रवेश दिया जायेगा जो आर्य वीर दल की शाखा में जाते हैं अथवा जिन्होंने आर्य वीर प्रथम श्रेणी का प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य	सत्यवीर आर्य	स्वामी देवव्रत	सत्यानन्द आर्य	अरविन्द नागपाल
प्रधान	महामन्त्री	प्र. संचालक	प्रधान	प्रबन्धक
दि.आ.प्र.सभा	सार्वदेशिक आर्य वीर दल		एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल	

भस्म अस्थियों को गंगा-यमुना में न डालें

हमारे ऋषि मुनियों ने वैदिक धर्म के उत्थान व मनुष्य धर्म के लिए सोलह संस्कार लिखे। जैसे हम मकान बनाते हैं, उसकी नींव पक्की व मजबूत बनाते हैं, जिससे मकान को कोई खतरा न हो, पूरी उम्र चले। इसी तरह ऋषियों ने सोलह संस्कार बनाये हैं- 1. गर्भाधान 2. पुंसवन 3. सीमन्तोन्नयनम् 4. जातकर्म संस्कार 5. नामकरणम् 6. निष्क्रमण संस्कार 7. चूडाकर्म संस्कार 8. अन्नप्राशन संस्कार 9. कर्णविधेन संस्कार 10. उपनयन संस्कार 11. वेदारम्भ संस्कार 12. समावर्तन संस्कार 13. विवाह संस्कार 14. वानप्रस्थाश्रम संस्कार 15. सन्यासाश्रम संस्कार 16. अन्त्येष्टिकर्म संस्कार।

ये संस्कार विद्वान शास्त्रियों द्वारा वेदमंत्रों से कराये जाते हैं। विद्वान शास्त्री हमें इनकी जानकारी देकर समझाते हैं और हवन पूजन द्वारा भगवान् का स्मरण कराते हैं और हवन के द्वारा सब देवताओं की आहुतियां दिलवाते हैं, साथ ही हम जो भी मानव जीव-जन्तु हैं उनको भी निरोगी बनाते हैं। वायुमंडल के द्वारा। संस्कारों द्वारा विद्वानों की सत्कार-पूजा होती है, उनका सम्मान हम धन-धान्य से उनका सत्कार करके उनका सहयोग करते हैं। साथ ही पूजा द्वारा घर में खुशियों से, पूजा से, धन-धान्य से परिवार व माता-पिता सब सुखी रहते हैं। जहां यह कार्य होता है, वहां माता-पिता व बड़े-बूढ़ों का सम्मान होता है। वहां भगवान का व लक्ष्मी का वास होता है। लेकिन आज हम संस्कारों को भूलते जा रहे हैं, सिर्फ बच्चे का जन्म, नामकरण, विवाह, अन्तिम संस्कार बच गये हैं। अन्तिम संस्कार में भी कंजूसी करते हैं। पहले इस संस्कार की बची हुई चद्दरों को गरीब आदमी पहनते-ओढ़ते थे मगर अब वे बाजारों में धुलकर बिक जाती हैं। इसी तरह घी, सामग्री चिता में डालनी होती है। घर वाले, शरीर का जितना वज़न होता है उतनी सामग्री, 1 टीन देशी घी, बूरा आदि सुगन्धित सामान डालें। अगर नहीं डालते तो पाप लगता है, क्योंकि शरीर के बाल, खाल, मांस जलते हैं , उससे दुर्गन्ध फैलती है, उसको दबाने के लिए घी, सामग्री चन्दन सुगन्धित सामान जरूरी है। संस्कार के बाद अस्थि-भस्म को खेतों में डालें या अस्थियों को जमीन में दबायें, गंगा यमुना आदि नदियों में न डालें, उससे प्रदूषण फैलता है, क्योंकि हमारे शरीर में रोग होते हैं, उसके कीटाणु जल में मिलकर रोग फैलाते हैं।, जैसे टी.वी., कैन्सर न जाने कितने ही रोग हैं। जैसे हम भस्म बनाते हैं, उनके गुण खत्म नहीं होते तभी वे दवा का काम करती हैं। इसी तरह हमारे रोग के कीटाणु भी खत्म नहीं होते हैं, इसलिए भस्म अस्थियों को जल में न डालें, इससे पाप लगता है अत: संस्कार वैदिक रीति से करें।

-कृष्णमुनि वानप्रस्थी

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर

30 मई से 5 जून 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा देहरादून के संयुक्त तत्वावधान में पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर इस वर्ष भी आयोजित किया जा रहा है। जाने वाले शिवरार्थी 29 मई सायं 9 बजे आई.एस.बी.टी. कश्मीरीगेट दिल्ली से प्रस्थान करेंगे तथा 5 जून 2016 को सायं 3 बजे दिल्ली के लिए वापस रवाना होंगे। जो शिवरार्थी ट्रेन से जाना चाहें अपनी सुविधानुसार रेलवे आरक्षण स्वयं करवा लें। शिविर शुल्क प्रति शिवरार्थी 1100/- देय होगा। जिसमें आने-जाने का मार्ग व्यय (सामान्य बस द्वारा) सम्मिलित है। शिविर में जाने वाले शिवरार्थी अपना शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय 15 हनुमान रोड, दिल्ली-01 में जमा करवा दें।

- सुखवीर सिंह आर्य, संयोजक,
मो. 09540012175, 09350502175

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह